International Journal ofApplied Research 2016; 2(7): 58-60

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(7): 58-60
www.allresearchjournal.com
Received: 28-05-2016
Accepted: 29-06-2016

संदीप कुमार
गांव माधोसिंगाना, जिला सिरसा, हरियाणा, भारत।

Correspondence
संदीप कुमार
गांव माधोसिंगाना, जिला सिरसा, हरियाणा, भारत।

अशोक लव कृत 'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' में नारी चेतना

संदीप कुमार

प्रस्तावना

अशोक लव की कविता हिन्दी क्षेत्र में रहने वाले लोगों के जातीय जीवन और सांस्कृतिक परम्पराओं को यत्किंचित् व्यक्त करने वाली कविता है। काव्य भाषा के जातीय रूप का निर्माण करने वाली हिन्दी साहित्य के जातीय तथा परम्परागत काव्य–रूपों को विकसित करने वाली कविता है। इस काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह श्रद्धेय नारी वर्ग के जीवन की अन्तः अनुभूतियों को व्यक्त करने के साथ–साथ आम जन–जीवन पर भी प्रकाश डालती है। साहित्य में भाव के बाद विचार की अपेक्षा कल्पना का विशेष महत्व माना जाता है। श्री फेड्रिक परस्कॉट कल्पना को मन की आँख मानते हैं।[1] 'मानविकी पारिभाषिक कोश' में कल्पना का अर्थ बताया गया हैμ सजावट, बनावट, अच्छी रचना, वह शक्ति जो अंतःकरण में नई और अनूठी वस्तुओं के स्वरूप उपस्थित करती है, किसी एक वस्तु में दूसरी वस्तु का आरोप, भावना, अनुमान करना, मान लेना आदि। वुडवर्थ ने कल्पना को मानसिक प्रहसतन (मेंटल मेनीपुलेशन) कहा है।[2] कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने भी कल्पना की परिभाषा की है। मेक्ड्यूगल ने कहा है 'हम भली–भाँति यह परिभाषा कर सकते हैं कि कल्पना अप्रत्यक्ष वस्तुओं के संबंध में चिन्तन–मनन है।'[3] 'एन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन' में कहा गया है कि कल्पना वह मानसिक शक्ति है जो कि वस्तुओं की अनुपस्थिति में उन्हें मस्तिष्क के समक्ष प्रस्तुत करती है।[4] इस प्रकार कल्पना की परिभाषाओं को देखकर एक बात निश्चित हो जाती है कि कल्पना एक ऐसी मानसिक शक्ति है जो कि वस्तुओं की अनुपस्थिति में या अप्रत्यक्ष पदार्थों के विषय में चिंतन–मनन करती है। वस्तुतः प्रत्येक कल्पना किसी न किसी पूर्व अनुभूति या प्रत्यक्षीकरण आधारित होती है। कल्पना सदा भविष्य की ओर अभिमुख होती है। वह सोद्देश्य या इच्छा–प्रेरित होती है। कल्पना का संबंध हमारी चेतना से है, इसका आलंबन शून्य या सत्ताहीन होता है। यह स्वच्छंद होती है। कल्पना का विशद् विवेचन करने वाले विद्वानों में कान्ट, कॉलरिज और क्रोचे के नाम उल्लेखनीय है। संक्षेप में कान्ट ने पुनर्निर्माण, सौन्दर्य बोध और उद्भावना शक्ति को कल्पना माना है। कालरिज ने पुनः शक्ति के द्वारा चित्रसंघात करने की प्रवृति को कल्पना माना है। क्रोचे के अनुसार कल्पना का सम्बन्ध स्वयं प्रकाश ज्ञान से है। वह मानव मस्तिष्क की सौन्दर्य बोधात्मक प्रवृति की प्रक्रिया है। प्राचीन भारतीय विद्वानों में केवल अभिनवगुप्त ने कल्पना पर विचार किया है। उनके अनुसार अपूर्व वस्तु के निर्माण में समर्थ प्रज्ञा ही कल्पना है।[5] आचार्य शुक्ल के अनुसार जो वस्तु हमसे अलग है, हमसे प्रतीत होती है, उसकी मूर्ति मन में लाकर उसके सामीप्य का अनुभव करना उपासना है। साहित्य वाले इसे भावना कहते हैं और आजकल के लोग कल्पना।[6] डा. श्यामसुन्दर दास के अनुसार ''विज्ञान में जो बुद्धि है, दर्शन में जो दृष्टि है, वही कविता में कल्पना है''[7] डा. गुलाबराय जी के मतासानुर ''कल्पना वह शक्ति है जिसके द्वारा हम अप्रत्यक्ष के मानसिक चित्र उपस्थित करते हैं।''[8] डा0 नगेन्द्र के अनुसार ..... एक प्रकार से अचेतन दशा में जो स्वप्नावस्था है, चेतन दशा में वह कल्पनावस्था है।[9]

प्रथम कविता मात्र शीर्षक को ही चरितार्थ ही नहीं करती वरन् समाज के विस्तृत पटल पर जो लड़कियों की सच्ची तस्वीर है, जिसे हर सजग नागरिक खींचना चाहता है, उसकी रूपरेखा है–

'और होती जाती है ज्यों ज्यों बडी।
उनके संघर्षों का संसार बढ़ता जाता है।
लड़कियां तो लड़कियां ही होती हैं।
उनके लिए जंजीरों के नाप एक जैसे ही होते हैं।[10]

प्रस्तुत पंक्तियां एक प्रश्न पस्तुत करती है। क्यूं यह विभिन्नता इतनी शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बावजूद है, क्योंकि भीतरी सत्य यह है कि हम सब लड़कियों को आसमान छूने के स्वप्न तो दिखाना चाहते हैं? उस पंतग के समान जिस की डोर किसी और के हाथ में है। जिससे वह जब

चाहे, ढील कर देकर उसे उड़ने दे या उच्च स्थान पर पंहुचते ही पल में आक्रोष की फिरकी में फिर लपेट दे। चाहे गांवों से गलियारों एवं संसद तक उनकी चार्प सुनाई दे रही है। यह सकारात्मक बदलाव है, परंतु इसी समाज में परिवारों में करतारो में जन्म लेकर घुट घुट कर मरती रही है। विभित्स सच्चाईयां एक खुली चुनौती है कि हर साल माता पिता को अपनी बेटी पर विश्वास करना चाहिए, उसकी बात को गंभीरता से लो उसे ऐसे कई खतरों से बचाने की कोशिश करें। कवि ने भी निम्नलिखित पंक्तियों में यही संदेष दिया है।

'और होती जाती है ज्यों ज्यों बड़ी।
उनके संघर्षों का संसार बढ़ता जाता है।
लड़कियां तो लड़कियां ही होती हैं।
उनके लिए जंजीरों के नाप एक जैसे ही होते हैं।[11]

यह कटु सत्य है कि लड़कियों का सबसे अधिक खतरा अपने घर के सगे संबधियों से है। यह एक नग्न सत्य है।

जैसे– 'सीखले करतारो।
जंगल की टेढ़ी मेंढ़ी सीधी
पगडंडी पर चलना।
उससे भी अधिक ज्वाला है'[12]

इन पंक्तियों में पुरूष होकर भी कवि चाहता है कि करतारो सही निर्णय ले। 'जहां जहां लगानी थी आग करतारो ने।
वहां वहां नहीं लगाई।[13] यह सच है कि कितनी ही करतारो अपने चाचा मामा भाई ही नहीं पिता के हाथों भी छली जाती है। यकिनन यह संख्या नगण्य है, परंतु होनी ही शर्मनाक नहीं है क्या?

अशोक लव ने जिस ईमानदारी बेबा की कठोरता एवं सत्यता से यह बातें रखी है वह सराहनीय है। इसी संदर्भ ने 'उत्तरों को तलाशती लड़किया' कविता में पुरूष कैसे भेड़िया बन जाता है। नारी कैसे बन जाती है लोमड़ी। यह कविता समाज के एक और रूप को प्रकट करती है। बेटी। लड़की मां से क्यों प्रश्न पूछती है।

'मां बेटी को जन्म ना देने का
पाप क्यों करती है?
सामाजिक परम्पराओं के
भयावह रूप को देखकर/
कांपा होगा तुम्हारा हृदय/
सच है नारी के जीवन का
अन्तिम सत्य मात्र नारी ही
जान सकती है जो पिता
अपनी बेटियों के प्रति
उदारमना एवं दयावान
होता है'[14]

वहीं अपनी पत्नी के प्रति भी अधिकारी एवं कठोर हो जाता है। (मैं डरता नहीं) का दंभ भरता है। वह क्यों भूल जाता है कि पत्नी भी किसी ना किसी की बेटी है। बस रूपान्तर है। बेटियां सदाबहार होती है ''रहती है चाहे जहां''। महकाती है। सजाती है। माता पिता का आंगन नारी खंड में जो सबसे अधिक मन को झकझोरने वाली कविता है। बस स्टाप पर द्रोपदी इस कविता का प्रत्येक शब्द मात्र अशोक लव की लेखनी ही दे सकती हैं। साधारण घटना के मर्म को पकड़ना अदभुत है महाभारत के पात्रों पर कितनी ही व्याख्याएं विश्लेषण, विज्ञजनों ने किए, परन्तु द्रोपदी जैसी ऐतहासिक पात्र को वर्तमान के परिपदेय में प्रस्तुत करना प्रंशसनीय है।

''दो सूखी चपातियां''/
एक फॉक अचार।
झट से उठा लिया आचार।
पोंछकर करने लगी बंद
उन्हें टिफिन बाक्स में।
भरे बस स्टाप पर अधेड़ औरत,
द्रोपदी बन खड़ी थी।
भूख सबसे बडा सत्य
चाहे शरीर को हो या शरीर की।
मंहगाई का दुशासन हर जगह खड़ा है।'[15]

4.8 मानवीय संघर्ष का यथार्थ चित्रणः–

कवि ने आलोच्य काव्य –संग्रह में मानवीय संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया है। इस प्रकार मां के विभिन्न रूप शिक्षा, प्रसार, साक्षरता मिशन, प्रवासी, पुत्र पुत्रियों की यादो में रचते बसते माता पिता नारी खंड इन्द्रधनुष सा है, जिसका मूल रंग एक ही है। भविष्य में प्रगति इसी प्रकार संघर्ष को कवि ने विभिन्न स्तरों पर भोगा महसूस किया, वरन अपनी सूझ बूझ एवं आत्मशक्ति से लड़े। कुंदन समान नई सोच पाई। इस खण्ड की कविताओं को व्यक्तिगत सामाजिक एवं विश्वस्तर पर आंका जा सकता है।

'स्वनिर्मित व्यक्ति की
आत्मशक्ति दिखती और
अच्छा नहीं लगता।
किसी और के जीवन की राह
का अनुकरण करना/
मैं बस मैं ही बना रहना चाहता हूँ''[16]

जो मनुष्य अपनी मनुष्यता को सहेज सकता है, वही मानवीय संघर्ष को नया आभास दे सकता है। कविता 'गर्म मोम' में प्रतीकात्मक रूप में जीवन को दर्शाया है। समयानुसार जीवन को मोम बनता है। मोम नरमी और गरमी दोनों का प्रतीक है। ऐसा विरेाधाभास जो संघर्ष को आंच देता है। इसी प्रकार आंतकवाद (धर्मांधता) एवं क्रूरता को तोता मैना के संवाद से गूठ अर्थ में बताया है।

'तोता बातें करता है।
हवा की सरसराहरो की।
मैना बातें करती हैं।
टहनियों और पेड़ों से बचने की' [17]

प्रस्तुत अंश में भीतर घात की बात करती है। वर्तमान में जीवित रहना ही चुनौती है अच्छा और बुरा जीवन तो दीगर बात है पंजाब प्रांत की त्रासदी 'जिंदर' में अंकित है उसी प्रकार कवित्व के सम्मान का अशुण रखने वाली पंक्तियां है। भीतर के पशु को मारना पड़ता है। करती होती है यात्रा पशुत्व से मनुष्यत्व की। कवि हृदय ही जन की पीड़ा को जन जन तक पंहुच पाता है संघर्ष खंड में युवा आमजन समाज पर्यावरण समाहित है। 'जिंदा रहेगी झुगिया'' कविता में आर्थिक तंगी का चित्रण करते हुए लिखा है–

'अ से आचार।
आ से आलू।
भूखे पेट में कुलबुलाने लगती है भूख।
खाने की चीजों के नाम सुन।
नहीं समझ आता अक्षर ज्ञान।
झोपड़ियों के बच्चों को।
थक जाती है लड़कियां।[18]

संघर्ष के बाद चिंतन खंड की कविताएं नयी भाषा सुन्दर एवं सुदृढ़ शब्द परम्परा लेकर आती है। जीवन संघर्ष से ही चिंतन की तलवार तेज होती है। कवि का भारत विभाजन का भोगा हुआ सत्य है। 'चिराग नहीं जलते से लेकर खूब नचाती राजनीति' की ओर ठोस कदम उठाया है। वहीं नव आगमन प्रत्येक के जीवन की सी अनुभूति है। 'पक्षियों का प्रवास' कविता यथार्थ का सुंदर उदाहरण है।

ऐसी ही समरूप भावना 'प्रवासी बेटे बेटियों' कविता में है वर्तमान में भारत के प्रत्येक परिवार की यह समस्या है। विदेश में बसते बच्चे त्यौहारों की तारिखें भी बदल सकते हैं। उनके आने पर ही होली दीवाली, राखी संभव हो जाती है। आत्म बल की प्रमुख पंक्तियां है–

'पर्वतों की तरह

सब कुछ सहकर
आगे बढ़ते लोग।
चिंतन की प्रतिक्रिया,
पीरागरी में कश्मीर कवि की
सामाजिक सोच को दर्शाता है।
लौट आता है
पीरागही के बबुओं में
शरर्णाथी कश्मीर।
कच्ची गलियों में बहते गंदे पानी में
डल झील के सपने देखता।[19]

प्रस्तुत खंड में सीमाओं के पार की खुशियां सांस्कृतिक मित्रता भी उल्लेखनीय है। पुस्तक का प्रत्येक खंड विशाणुरूप भाग से गुथा हुआ गुलदस्ता है। कस्तुरी मृग समान सुहासित एवं समाज के शरीर पर लगी चोट को हिम्मत से खुला दिखाना साहसी कदम है।

प्रथम खण्ड उस आधी दुनिया के अस्तित्व बोध, विचारों, सोच, भावनाओं समस्याओं की कठोर जमीन पर टिका है जो सृष्टि की रचयिता है, संसार की धुरी है, अपने कार्य, भावनाओं, स्पर्श, सुलभता, से जागातिक जड़ता में चेतना भरती है, अंधकार में प्रकाश फूंकती है परन्तु सदियों से इन्द्र के जुल्म का शिकार, अहिल्या की भांति अगिनत पद प्रहार सहती, रावणत्व की मार झेलती, अग्नि–परीक्षा देती हुई अपलक रंगों की राह तक रही है। यानि इस खण्ड में धोर यथार्थवादी स्त्री विमर्ष है। बहरहाल, इस खण्ड का वैशिष्ट्य इसलिए बढ़ जाता है कि पुरुष रचनाकार द्वारा मानवीय संस्पर्षों को जगाने का एक अनूठा प्रयास है जो घातक है इस बात का कि एक दूसरे के पूरक स्त्री पुरुष है के बीच आकर्षण, आबन्ध मात्र देह नहीं, केवल भौतिक नहीं बल्कि उसमें भावनाओं, संवेदनाओं का गुरुत्व भी सम्मिलित है।

निश्कर्शः

कहा जा सकता है कि नारी के भीतर पलते नारी सुलभ कोमल मानवीय संवेदनों को देखने जानने का अवकाश हमारे भाव हीन समाज की आचार संहिता देती ही नहीं नारी को मात्र वस्तु के नजरिये से देखा जाता है। स्त्री मात्र देह है, भोग्या को सरलीकृत है, भार्या है, ढोर गंवार शुद्र पशु .....वर्ग की सदस्या है ..... लाख जतन है? करके पुरुषों के साथ चलके, पुरुषों से कभी आगे बढ़कर भी वह अपनी इस कलंकित छवि को बदल नहीं पाई है और व्यक्तिगत तौर पर यों कागजों पर बिखरा या कहूं सिमटा स्त्री विमर्ष शोधार्थी को दलित– विमर्ष की भांति एक राजनैतिक पैंतरे और छदम स्त्रीवाद से अधिक और अतिरिक्त कुछ नहीं लगता। धन को परन्तु अशोक जी की अधिकतर कविताएं सीता, सावित्री से कुछ हटकर हैं, परन्तु कुछेक कविताओं की वही तुलसीदासीय पृष्ठभूमि है या कहिए उंचाई पर वहीं कसी तनी रस्सी बंधी है जिस पर शून्य सी वर्तुलाकार स्त्री नटनी की भांति परम्पराओं, रुढ़ियों कर्तव्यों का भारी भरकम, लम्बा मोटा बाँस उठाए लड़के न होने और लड़की होने के बीच संतुलन बनाए चलती हुई स्वयं को विलुप्त प्रजाती का जीव बनने की कवायद में जुटी हैं। जन्म लेते ही परिवार में जगह बनाने के लिए हो जाता है शुरु उनका संघर्ष और होती जाती हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. जयप्रकाश दयाल, आधुनिक मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पृ. 87
2. वही, पृ. 7
3. डॉ. जयप्रकाश दयाल, आधुनिक मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पृ. 133
4. पृ. 906
5. डॉ. नगेंद्र शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त भाग पृ0 77
6. आचार्य रामचंद्र शुक्लः चिन्तामणि भाग 2 पृ0 31
7. डॉ. गुलाबराय : सिद्धान्त और अध्ययन पृ0 45
8. डॉ. नगेन्द्रः विचार और अनुभूति' 'कल्पना' नामक निबन्ध पृ0 34
9. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 23
10. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 23
11. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 37
12. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 37
13. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 42
14. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 41
15. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 59
16. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 59
17. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 75
18. अशोक लवः'लड़कियां छूना चाहती हैं आसमान' पृ0 31